Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIV Issue – II March - April 2025

प्रेमचन्द के साहित्य में नारी जीवन की समस्याऐं

सुमन कुमारी
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
महिला महाविद्यालय, झोझू कलाँ
जिला – चरखी दादरी (हरियाणा)

सारांश :–

प्राचीनकाल में भारतीय समाज में नारी का स्थान सम्माननीय था। कालान्तर में नारी को अनेक बुराईयों ने जकड़कर उसके स्वतन्त्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया। नारी जन्म से लेकर मृत्यु तक अनके समस्याओं से घिर गई। नारी के जीवन को अभिशाप समझा जाने लगा। अनेक समाज सुधाारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयास किया। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थ वर्णन किया है। उन्होंने समाज की कुरीतियों और नारी के शोषण को उजागर किया गया है। उनके उपन्यासों में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बाल–विवाह, विधवा जीवन और पर्दा प्रथा जैसी समस्याओं के कारण नारियों को कई तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता था।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी की स्वतन्त्रता और अधिकारों के लिए भी आवाज उठाई है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे नारी को समाज में एक कमजोर और अधीन व्यक्ति के रूप में देखा जाता है और कैसे उसे अपनी इच्छा के अनुसार जीने का अधिकार नहीं दिया जाता है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी की शक्ति और संघर्ष को भी दिखाया गया है। वे नारी को एक मजबूत और स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हैं जो समाज में अपनी जगह बनाने के लिए संघर्ष करती है।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at http://www.goeiirj.com

मुख्य शब्द : समस्या, लैंगिक भेदभाव, समाज, शिक्षा की कमी, नारी।

प्रस्तावना :–

नारी और नर दोनों सृष्टि के आरम्भ के हेतुभूत कारक हैं। मनु और शतरूपा दोनों के बिना सृष्टि आगे वृद्धि को प्राप्त कर ही नहीं सकती थी। नर और नारी समान रूप से सृष्टि में विद्यमान हैं। हाँ! नारी का समाज में अधिक सम्मान दिया जाना उचित है। कहीं न कहीं समाज के संरक्षण, सांस्कृतिक हस्तान्तरण और सामाजिक व्यवस्थाओं को अनुकूल और अनुशासित रखने का दायित्व स्त्रियों का ही रहता है। माता के रूप में नारी वैदिक काल से ही पूज्या रही है। नारी जब मातृत्व को प्राप्त करती है, वह उसके जीवन की सर्वोत्कृष्ट पदवी होती है। नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग समाज को प्रगति एवं उन्नति की दिशा में अग्रसर करता है। इन सम्बन्धों में तनाव व संघर्ष के कारण अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। प्रेमचन्द युगीन भारतीय समाज में नारी और पुरूष के सम्बन्धों में तनाव की स्थिति चल रही थी, जिसका

मुख्य कारण पुरातन जीवन मूल्य और सामाजिक आदर्श थे। समय बीतने पर सामाजिक अवरोध नारी के जीवन की बेड़ियाँ बन गई। इन बेड़ियों में जकड़ी हुई नारी का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रहा। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं को कई भागों में वर्गीकृत किया है। उन्होंने बाल–विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा जीवन, वेश्यावृति, पर्दा प्रथा और बहु विवाह जैसी समस्याओं को उठाया है।

बाल विवाह :–

प्रेमचन्द ने बाल विवाह की कुप्रथा का विरोध किया और दिखाया कि यह कैसे बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करता है। प्रेमचन्द ने बाल–विवाह को एक सामाजिक बुराई के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कई कहानियों में बाल–विवाह के दुष्परिणामों और विधवाओं की दुर्दशा पर प्रकाश डाला गया है, जैसे कि लांछन, उन्माद, नैराश्य लीला और सुभागी। प्रेमचन्द ने बाल–विवाह को सामाजिक विष के रूप में वर्णित किया है और इसकी घोर निंदा भी की है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही समाज सुधारवादियों ने सामाजिक कुसंस्कार तथा परम्पराओं का विरोध प्रारम्भ किया था। विशेष रूप से हिन्दू समाज की विवाह पद्धतियों के कारण घर में ही अशान्ति, अज्ञान और दुःख चरम निराशा की स्थिति तक पहुँचा था। बाल–विवाह के कारण नारी जीवन ध्वस्त सा हो गया था। बाल–विवाह के कारण बालिकाओं का जीवन दयनीय बन गया था। इन सारी वास्तविकताओं का लेखा–जोखा हमें प्रेमचन्द जी के साहित्य में मिल जाता है। प्रेमचन्द जी ने नायिका प्रधान उपन्यास लिखे हैं जिसमें नारी की विशेषताओं का, गुणों का, अवगुणों का तथा समस्याओं को दर्शाया है। प्रेमचन्द के युग में बाल विवाह आम बात थी। इसका कारण लोगों में अंधविश्वास था। जैसे–जैसे विवाह के लिए लड़की की उम्र बढ़ेगी, वैसे माँ–बाप को नरक भोगना पड़ेगा। इस डर से माँ–बाप अपनी लड़कियों की शादी बचपन में ही करते थे। इसके चलते वर की आयु भी नहीं देखते थे। लड़के–लड़की आयु में भी बहुत ज्यादा अन्तर पाया जाता था। आयु में अन्तर होने के कारण विचारों में भी अन्तर होता था। बाल–विवाह का एक दुष्परिणाम विधवा समस्या है। प्रेमचन्द जिस तरह बाल–विवाह के विरोधी थे उसी तरह बाल–विधवा के पक्षधर भी थे। उन्होंने स्वयं एक बाल–विधवा से विवाह किया था। इसी तरह 'धिक्कार' कहानी में भी बाल–विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया है।

अनमेल विवाह :–

अनमेल विवाह की समस्या काफी पुरानी है। ऐसे विवाह में कहीं आयु का अन्तर होता है तो कहीं विचारों का अन्तर होता है।अनमेल विवाह के पीछे मुख्यतः दहेज प्रथा कार्यरत है। जिसके कारण कई नारियों का जीवन बरबाद हो रहा है। प्रेमचन्द लोगों को समझाते हुए कहते हैं कि ''अपनी बालिकाओं के लिए मत देखो धन, मत देखो जायदाद, मत देखो कुलीनता, केवल योग्य वर देखो। एक स्त्री सब कुछ सह सकती है, बड़े से बड़ा संकट भी सह सकती है। अगर नहीं सह सकती तो अपने यौवन काल की

उमंगों को कुचला जाना।'' प्रेमचन्द के साहित्य में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण विस्तृत रूप से मिलता है। 'निर्मला' उपन्यास की निर्मला अनमेल विवाह की प्रथा पर बलिदान होने वाली नारी की अत्यन्त मार्मिक कथा है। कायाकल्प में भी अनमेल विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला गया है – लड़की कंगाल को दे दें पर बूढ़े को ना दें। गरीब रहेगी तो क्या, जन्म भर रोना तो नहीं रहेगा। प्रेमचन्द आदर्शवादी लेखक थे। अतः उन्होंने पुरानी पीढ़ियों का विश्लेषण तो किया परन्तु वे नई आस्थाओं को भी पूर्ण रूप से ना स्वीकार पाए। उनके नारी पात्र सभी प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त हैं।

दहेज प्रथा :–

प्रेमचन्द की दृष्टि में दहेज नैतिक समस्या है आर्थिक नहीं। लोक नैतिक दृष्टि से इतने पतित हो गए हैं कि अपने पुत्र की पढ़ाई का खर्च और पुत्री के विवाह का व्यय अपने पुरूषार्थ की कमाई से नही दहेज की रकम से वसुलना चाहते हैं। कुसुम का पति उससे इसलिए नहीं बोलता कि कुसुम अपने पिता से उसके विलायत जाने का खर्च लाकर नहीं देती। ऐसे में प्रेमचन्द कहते हैं वाह री दुनिया और वाह रे हिन्दू समाज, तेरे यहाँ ऐसे–ऐसे स्वार्थ के दास पड़े हुए हैं जो एक अबला का जीवन संकट में डालकर उसके पिता पर ऐसा अत्याचार और दबाव डालकर ऊँचा पद प्राप्त करना चाहते हैं। दहेज प्रथा प्रेमचन्द के युग में भी अपना रंग दिखा रही थी। दहेज प्रथा आज और भी विकराल रूप धारण कर चुकी है। दहेज प्रथा एक ऐसी समस्या है जो अपने साथ–साथ अन्य समस्याओं को जन्म देती है। इसलिए यह समाज के मस्तक का कलंक है। 'सेवा सदन' की सुमन का विवाह भी दहेज के अभाव में विधुर एवं शक्की स्वभाव गजाधर से कर दिया जाता है जिससे सुमन को नाटकीय जीवन जीने पर विवश होना पड़ता है। आज के अनेक सुन्दर सुसंस्कृत, योग्य युवतियों का जीवन भी दहेज के अभाव में कष्टमय बन रहा है। दहेज के अभाव में ऐसी सुंदर व योग्यकन्या का अयोग्य पात्र के साथ विवाह कर दिया जाता है जिसके कारण आजीवन वह आँसू बहाती रहती है। प्रेमचन्द ने दहेज–प्रथा को समाज की सबसे विकट समस्या बताया है। उनकी दृष्टि में इसका उपाय तो नई पीढ़ी के लोग ही निकाल सकते हैं यदि वे दहेज न लेने का दृढ़–संकल्प ले लें। प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' में होरी की बड़ी बेटी सोना अपने माता–पिता की आर्थिक स्थिति को भली–भाँति जानती है। उसे पता है कि उसके पिता उसके दहेज के लिए दो सौ रूपये भी उधार लेगा तो आजीवन इतनी बड़ी रकम को उतार नहीं सकेगा। अतः गोदान में प्रेमचन्द ने इस समस्या का समाधान बताया है कि यदि युवती और युवक दोनों ही बिना दहेज के विवाह करने का दृढ़ संकल्प लें तो समस्या का उन्मूलन होते देर न लगे।

विधवा जीवन :–

नारी का जीवन पति के बिना दूभर हो जाता है। प्रेमचन्द ने विधवा की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। वे विधवा विवाह के समर्थ रहे हैं। संयुक्त परिवार में विधवा का जीवन और भी कष्टमय बन जाता था। उस समय विधवा के पुनर्विवाह का प्रचलन नहीं था। 'गबन' उपन्यास में रतन के जीवन चित्रण

के माध्यम से विधवा समस्या को उठाया गया है। रतना का विवाह बूढ़े वकील से हुआ था। उसकी कोई सन्तान नहीं थी। बूढ़ा पति अनेक बीमारियों से घिरकर राम को प्यारा हो गया और विधवा रतन को संसार में ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया। रतन का जीवन अत्यन्त दुःखमयी हो गया। उसके इस कथन से उसके दुःखों का अनुमान लगाया जा सकता है कि उसने अपना जीवन किन कठिन परिस्थितियों में व्यतीत किया था। प्रेमचन्द के साहित्य में विधवा जीवन की समस्या को दर्शाया गया है, जिसे उन्होंने भारतीय नारी के लिए एक बड़ा अभिशाप माना है। उन्होंने अपने लेखन में विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया है, और स्वयं ने विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया था। प्रेमचन्द ने विधवाओं की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को भी उजागर किया है, और उनके जीवन की कठिनाइयों को दर्शाया है। प्रेमचन्द ने प्रतिज्ञा उपन्यास में विधवा जीवन की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को दर्शाया है। ''गोदान'' उपन्यास में गोबर और झुनिया का विवाह विधवा पुनर्विवाह को दर्शाता है। नायिका पूर्णा आश्रयहीन विधवा है। समाज के भूखे भेड़िये उसके संचय को तोड़ना चाहते हैं। उपन्यास में प्रेमचन्द ने विधवा समस्या को नए रूप में प्रस्तुत किया है एंव विकल्प भी सुझाया है।

वेश्यावृत्ति :–

वेश्यावृत्ति समाज के माथे का कलंक है। इससे बुरी बात यह है कि समाज इसे घृणित कार्य कहता है किन्तु इसके लिए उत्तरदायी भी समाज ही है। प्रेमचन्द ने वेश्यावृत्ति का अपनी रचनाओं के माध्यम से यथार्थ चित्रांकन किया है। उसके मूल कारणों पर प्रकाश डालते हुए उसके दुष्परिणामों को भी उजागर किया है। समाज पर इस समस्या का क्या प्रभाव पड़ता है इसको उद्घाटित करते हुए उन्होंने मानवता के मस्तक के इस कलंक को दूर करने के उपाय भी बताए हैं। प्रेमचन्द ने वेश्यावृत्ति को उल्लेख मुख्यतः 'सेवासदन', 'गबन', 'रंगभूमि' आदि उपन्यासों में किया है। 'सेवासदन' उपन्यास में प्रेमचन्द ने वेश्यावृत्ति के कारणों पर विस्तारपूर्वक विचार किया है। एक ओर निर्धन मजदूर की पत्नी है जिसे पेटभर भोजन कड़ी कठिनाई से मिलता है तथा दूसरी ओर उसी मोहल्ले में भोली जैसी वैश्याएं रहती हैं जिनके पास श्रृंगार के अनेक साधन और नाना प्रकार के व्यंजन खाने के लिए विद्यमान रहते हैं। इतना ही नहीं समाज के बड़े–बड़े धर्मात्मा व अमीर लोग उनको सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। दूसरी ओर सुमन जैसी सुन्दर सुशिक्षित युवती हैं जो अभाव का जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर हैं। अतः प्रेमचन्द के साहित्य में वेश्यावृत्ति के जिन मूल कारणों पर प्रकाश डाला गया है वे आज भी हमारे समाज में बने हुए हैं। उन पर विचार करने की आवश्यकता आज भी उतनी ही है जितनी प्रेमचन्द काल में थी। प्रेमचन्द ने वेश्यावृत्ति को केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं बल्कि सामाजिक समस्या के रूप में देखा, जिसके मूल में आर्थिक असमानता, सामाजिक रूढ़िवादी विचार और लैंगिक शोषण जैसे कारक शामिल हैं। प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास 'सेवासदन' वेश्यावृत्ति की समस्या को गहराई से दर्शाता है।

पर्दा प्रथा :–

प्रेमचन्द स्त्रियों के पूर्ण विकास के लिए पर्दा प्रथा के घोर विरोधी रहे हैं क्योंकि यह प्रथा स्त्रियों के शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की दुर्गति में बहुत बड़ा हाथ रखती है। उन्होंने अन्य समस्याओं की भाँति पर्दे की समस्या को भी उजागर किया है तथा उसके दुष्परिणामों को चित्रित किया है। वे चाहते हैं कि एक ऐसा कानून बनाना चाहिए जिससे कोई स्त्री पर्दे में न रह सके। प्रेमचन्द ने पर्दा प्रथा के कारण स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को उजागर किया है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार यह प्रथा स्त्रियों को घर में कैद कर देती है और उन्हें समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने से रोकती है।'दुराशा' कहानी पर्दा प्रथा के कारण एक महिला के जीवन में आने वाली कठिनाइयों और उसके मानसिक रूप से टूटने की कहानी है।

आज की नारी शिक्षा के साथ–साथ शहरों में पर्दा प्रथा प्रायः समाप्त हो चुकी है फिर भी आदर एवं संस्कारवश मध्यम वर्गीय परिवार की स्त्रियाँ बड़ों के सामने घूँघट डालती हैं। नवजागरण के तहत पर्दा प्रथा का स्त्री की प्रगति में अवरोध माना गया है। प्रेमचन्द अपनी पत्नी शिवरानी देवी से भी कहते हैं – ''मैं तुमसे कहता हूँ कि पर्दा प्रथा क्यों नहीं छोड़ती।'' कभी पर्दा प्रथा के कारण 'दुराशा' कहानी का हाल हो सकता है। जिसमें दयांशकर अपने मित्रों को होली के दिन घर बुलाकर भी कुछ खिला नहीं सकता क्योंकि घर में दियासलाई नहीं था और स्त्री बाहर जाकर ना तो दियासलाई खरीद सकती थी और ना ही मांग सकती थी। गाँधी जी ने भी आजादी की कामयाबी के लिए स्त्रियों को पर्दे की कैद से आजाद होने की बात की।

बहुविवाह :–

प्रेमचन्द के समय बहुविवाह का भी प्रचलन था, जिसके कारण नारी जीवन समस्या ग्रस्त था। विलास भावना से किए गए एकाधिक विवाह की प्रेमचन्द कड़े शब्दों में निंदा करते हैं। प्रथम पत्नी के रहते हुए द्वितीय विवाह रचाने वाले लोगों की प्रथम स्त्री का जीवन घोर नरक यातना के सदृश हो जाता है। इसका वर्णन –'सौत' कहानी में विस्तृत रूप से देखा जा सकता है। 'सौत' में गोदावरी अपनी स्वेच्छा से पति की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए सौत का सहर्ष स्वागत करती है, परन्तु उसका जीवन कष्टमय हो जाता है और अपना अन्त गंगा में जाकर करती है। इस प्रकार बहु–विवाह घोर अपराध है। प्रेमचन्द के साहित्य में बहु–विवाह, बाल–विवाह, अनमेल विवाह जैसी समस्याओं को उजागर किया गया है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में समाज के रूढ़िवादी विचारों और कुप्रथाओं को भी चित्रित किया है जिसके कारण महिलाओं को बहु–विवाह जैसी समस्याओं को सामना करना पड़ता था। प्रेमचन्द ने नारी शिक्षा को समाज के विकास के लिए आवश्यक माना है जो नारी जीवन की समस्याओं को दूर करने में मदद कर सकती है ताकि एक शिक्षित नारी समाज के अंधविश्वासों से बाहर निकलकर अपना जीवन यापन कर सके।

निष्कर्ष :–

नारी जीवन आरम्भ से अन्त तक अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। उसके कदम–कदम पर समस्या जटिल रूप से खड़ी है। कथाकार प्रेमचन्द ने नारी जीवन को निकट से देखा। उसकी समस्याओं को परखा और उनके समाधान के प्रयत्न भी किए। प्रेमचन्द का उद्देश्य था नारियों की समस्याओं से परिचित कर उन्हें जागरूक एवं सचेत करना ताकि वे अपनी प्रतिष्ठा की लड़ाई खुद लड़ सकें। जहाँ आधुनिक काल में भी नारियों को केवल अबला एवं श्रद्धा से सम्मानित कर मानवता की परिधि से ही निष्कासित कर दिया जाता है। प्रेमचन्द ने नारी मूल्यों के लिए अपने साहित्य द्वारा जो संघर्ष किया वह नवजागरण के इतिहास में बड़ा योगदान है। प्रेमचन्द ने जिन समस्याओं को अपने साहित्य में उठाया है और उनके जो समाधान प्रस्तुत किए है, वे समस्याएं आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं और उनको सुलझाने के लिए प्रेमचन्द द्वारा प्रस्तुत किए गए समाधान भी कारगर सिद्ध हो सकते हैं। उन्होंने अपने साहित्य में जिन शाश्वत जीवन मूल्यों का चित्रण किया है, उन का महत्व हमारे जीवन में आज भी कम नहीं हुआ है चाहे वह शिक्षा पद्धति है या नैतिकता है। अतः प्रेमचन्द का साहित्य आज के जीवन के लिए उतना ही प्रासंगिक है जितना कि प्रेमचन्द के युग में था। यही प्रेमचन्द के साहित्य की महान सफलता है।

संदर्भ सूची :–

- शिवरानी देवी, प्रेमचन्द घर में, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1956, पृष्ठ संख्या 113
- प्रेमचन्द – गोदान
- प्रतिज्ञा – संस्करण, 1986 ई0
- निर्मला – संस्करण, 1986 ई0
- प्रेमचन्द का नारी चित्रण – गीता लाल, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
- प्रेमचन्द – नारी जीवन की कहानियाँ
- प्रेमचन्द – मानसरोवर भाग तीन